

सत्यसंगरः सत्ययज्ञः यान्येवसंगमनामानितानिनियज्ञनामानी तियास्कदचनात् ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ विकल्पकाः मृष्टामृष्टविभाजकाः

त्वंतुधर्ममर्तिर्नित्यं धर्मज्ञः सत्यसंगरः ॥ विमुक्तः सर्वसंगेभ्यो भूय एव भविष्यसि ॥ १२ ॥ यथा भगीरथो राजानश्च गयादयः ॥ यथाययातिः कौतियतया  
त्वमपि पांडव ॥ १३ ॥ युधिष्ठिर उवाच न हर्षं त्संप्रपश्यामि वाक्यस्यास्योत्तरं क्वचित् ॥ स्मरेद्दिदेवराजो यं कोनामाभ्यधिकस्ततः ॥ १४ ॥ भवता संगमो यस्य  
भ्राता चैव धनं जयः ॥ वासवः स्मरते यस्य कोनामाभ्यधिकस्ततः ॥ १५ ॥ यच्च मां भगवानाहतीर्थानां दर्शनं प्रति ॥ धौम्यस्य वचनादेवा बुद्धिः पूर्वकृतैव मे ॥  
॥ १६ ॥ तद्यदा मन्यसे ब्रह्म नृगमनं तीर्थदर्शने ॥ तदैव गंतास्मि तीर्थान्येष मे निश्चयः परः ॥ १७ ॥ वैशंपायन उवाच गमने कृतबुद्धिं तु पांडवं लोमशो ब्रवी  
त् ॥ लघुर्भव महाराज लघुः स्वैरंगमिष्यसि ॥ १८ ॥ युधिष्ठिर उवाच भिक्षाभुजो निवर्त्ततां ब्राह्मणाय तयश्च ये ॥ क्षुत्तृडध्वश्च मायाशरीर्ता तिमसहिष्णवः ॥  
॥ १९ ॥ ते सर्वे विनिवर्त्ततां ये च मिषु भुजो हि जाः ॥ पक्षान्नलेद्यपानानां मांसानां च विकल्पकाः ॥ २० ॥ तेपि सर्वे निवर्त्ततां ये च सूदानुयायिनः ॥ मया यथोचिता  
जीव्यैः संविभक्ताश्च वृत्तिभिः ॥ २१ ॥ ये चाप्यनुगताः पौराज भक्तिपुरः सराः ॥ धृतराष्ट्रं महाराजमभिगच्छंतु ते च वै ॥ २२ ॥ सदास्यति यथा कालमुचितायस्य  
याभृतिः ॥ सचेद्यथोचितां वृत्तिं न दद्यान्मनुजेश्वरः ॥ २३ ॥ अस्मत्प्रिय हि तार्थाय पांचाल्योवः प्रदास्यति ॥ २४ ॥ वैशंपायन उवाच ततो भूयिष्ठुशः पौ  
रागुरुभारप्रपीडिताः ॥ विप्राश्च यतयो मुख्या जग्मुर्नागपुरं प्रति ॥ २५ ॥ तान्सर्वान्धर्मराजस्य प्रेम्णाराजां विकासुतः ॥ प्रतिजग्राह विधिवद्धनैश्च समतर्पयत्  
॥ २६ ॥ ततः कुंती सुतोरालघुभिर्ब्राह्मणैः सह ॥ लोमशेन च सुप्रीतस्त्रिरात्रं काम्यकेऽवसत् ॥ २७ ॥ इति श्रीमहाभारते आरण्यके पर्वणि तीर्थयात्रापर्वणि लो  
मशतीर्थयात्रायां दिनवतितमोऽध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

॥ २० ॥ आजीव्यैः मृत्यादिभिः वृत्तिभिर्जीवने हेतुभिरन्नादिभिः ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ पांचाल्योऽपदः वः युष्मभ्यं ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ इत्यारण्यके पर्वणि नैलकंठीये भारतभावादीये  
द्दिनवतितमोऽध्यायः ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥